ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 206-209

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

रामदरश मिश्र के 'सूखता हुआ तालाब' उपन्यास में ग्राम्य-जीवन का यथार्थ

मुकेश चन्द

एम.ए. हिन्दी, एम.फिल., पी–एच.डी., बी.एड., एम.ए.एड., सिरसौंदा रूपबास, जिला– भरतपुर (राजस्थान) भारत।

Received- 30.11.2019, Revised- 04.12.2019, Accepted - 07.12.2019 E-mail: mukeshchandrbs2015@gmail.com

सारांश : *भारत गाँव का देश है। देश की लगभग सत्तर प्रतिशत आबादी गाँव में रहती है। जैसा कि कहा गया है– 'भारत माता ग्रामवासिनी।' अगर कहा जाए कि भारत की आत्मा गाँव में बसती है, तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। आज भी गाँव देश की मूलभूत इकाई हैं। गाँव जीवन यथार्थ के प्रतिनिधि है। वस्तुतः भारतीय ग्राम–जीवन के प्रति रामदरश मिश्र जी का असाधारण आकर्शण रहा है, जिसके फलस्वरूप उनके उपन्यासों में भी ग्राम्य–जीवन के यथार्थ का निरूपण मिलता है। इनमें से 'पानी के प्राचीर', 'जल टूटता हुआ', सूखता हुआ तालाब' और 'बीस बरस' में तो मुख्य रूप से ग्राम–जीवन के यथार्थ का ही चित्रण हुआ है।*

कुंजी शब्द– ग्रामवासिनी, ग्राम्य जीवन, पानी के प्राचीर, जल टूटता हुआ, सूखता हुआ तालाब, बीस बरस, पिरोया।

'सूखता हुआ तालाब' में ग्राम्य जीवन का यथार्थ 'सूखता हुआ तालाब' (1972) रामदरश मिश्र का चौथा उपन्यास है। 'पानी के प्राचीर' उपन्यास में उत्तरप्रदेश का स्वाधीनतापूर्व का गाँव है और 'जल टूटता हुआ' में स्वाधीनता के बाद का, जबकि 'सूखता हुआ तालाब' उपन्यास प्रथम दो उपन्यासों के क्रम में समकालीन, ग्राम.जीवन के बदलते भाव.बोध को प्रस्तुत करता है। 'जल टूटता हुआ' में विस्तृत धरातल पर गाँव जीवन के सम्पूर्ण यथार्थ को पकड़ने का प्रयत्न था, पर 'सूखता हुआ तालाब' में गाँव की ज़िन्दगी का एक खण्ड चित्र लिया गया है। इस उपन्यास में भी किसी एक व्यक्ति विशेष की कथा नहीं कही गई, वरन् सम्पूर्ण गाँव की कथा प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया गया है। 'सूखता हुआ तालाब' का संबंध उत्तरप्रदेश का शिकारपुर के ग्रामीण जीवन से है, जो आजादी के बाद का गाँव का यथार्थ है। इसे निम्नवत् शीर्षकों के अन्तर्गत प्रस्तुत किया जा सकता है :–

(1) दलगत राजनीति की सड़ांध– 'सूखता हुआ तालाब' की सम्पूर्ण कहानी एक सुविचारित कथा.केन्द्र पर टिकी हुई है। यह केन्द्र है बिरादरी का भोज.भात। इसे लेकर ही गाँव में दल बनते बिगड़ते हैं। इसी की आड़ में फसादी अपना जाल फैलाते हैं तथा राजनीतिज्ञ अपनी गोटी बैठाते हैं। गाँव की सामान्य.सी, घटनाएँ भी राजनीति से परिचालित होती हैं–यही उपन्यास का मुख्य स्वर है। देवप्रकाश का समाज से बहिष्कार होता है क्योंकि उसके, भाई अवतार ने (जो कि विधुर थे) पड़ोसी गाँव की पासिन से प्यार किया था। इस संदर्भ में देवप्रकाश कहता है– "यह तो, राजनीति का जमाना है। एक चीज दूसरी से जुड़ जाती है। मैं मानता हूँ कि इसी गाँव में अनेक लोग पहले भी पकड़े गए होंगे आशनाई में, लेकिन लोगों ने उन्हें हँसकर, गाली देकर छोड़ दिया होगा या पट्टीदारों ने इस घटना को पचा लिया होगा। अब यह सब राजनीति का ही प्रताप है।" ('रामदरष मिश्र रचनावली.6',पृ.–07)

उपन्यास में मिश्र जी का उद्देश्य स्वातंष्योत्तर काल के भारतीय गाँव के संबंध में अपनी एक धारणा को उपस्थित करना है। रामी तालाब के प्रतीकार्थ के रूप में इसी धारणा को कथा.सूत्र में पिरोया गया है। रामी तालाब को कभी पूर्वजों ने सूखे से जूझने के लिए बनवाया था। किन्तु गाँव के इस तालाब का जल अर्थात् जीवन का स्त्रोत शहर और राजधानी की राजनीति की सड़ी गर्मी से सूखकर सिर्फ कीचड़ रह गया है, सामूहिक सद्भाव का लहलहाता, बुलाता, गुनगुनाता जल अब व्यक्तिगत स्वार्थ के छोटे.छोटे गड्ढ़ों में सिमट कर सड़ रहा है। देवप्रकाश देखता है– "तालाब को देखा पानी सूखता जा रहा था और कीचड़ की सड़ांध.सी उठ रही थी। और एकाध आदमी तालाब के सूखते हुए गंदे जल में नहाने की क्रिया सम्पन्न कर रहे हैं। हाँ, क्रियाएँ तो अब भी चल रही हैं लेकिन क्रियाओं की आत्मा छूटकर कहीं गिर गई हैं।"(वही,पृ.–05)

यौन.सम्बंधों की सामाजिक नैतिकता की नियन्ता भी राजनीति ही है। गाँव की राजनीति के नियन्ता ठेकेदार शामदेव, शिवलाल आदि शरीर की स्वाभाविक यौन आवश्यकता को धर्म की सड़ांध से जोड़ अपना उल्लू सीधा करते हैं और नए.नए कुचक्रों का आए दिन सृजन करते हैं। बेशर्मी की हद तो उस समय दीखती है जब शिवलाल की लड़की को मास्टर धर्मेन्द्र को गर्भ रह जाता है और रवीन्द्र के सिर मढ़ दिया जाता है। परन्तु यथार्थ सामने आ जाता है। गुट का होने के नाते शिवलाल का लड़का रामलाल का पक्ष लेता है और अपनी बहिन के साथ हुए अवैध सम्बंध को भी वैधता प्रदान करता है– "आ गाँव वाले सालों की क्यों छाती फटती है, धर्मेन्द्र भाइया ने कुछ किया है तो मेरी ही बहन के साथ किया है न।"(वही,पृ.–59)

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

यौन.सम्बंध का इस्तेमाल करने वाली इस कुटिल राजनीति ने पूरे गाँव को भ्रष्ट कर रखा है। यह पुरानी कीचड़ है, सड़ी, बदबूदार और उबकाई लाने वाली, किन्तु गाँव के नेता इसका भी एक राजनैतिक हथियार के रूप में उपयोग करते हैं। दूसरी पुरानी कीचड़ है जाति–पाँति का शिकंजा और जरा–जरा सी बात पर जाति से निष्कासन। आज इस जाति से बहिष्कार के पीछे जातीय पवित्रता नहीं है। बल्कि अब यह राजनीति का एक शक्तिशाली हथियार बन गया है। जैसा कि जैराम धर्मेन्द्र को समझाते हुए कहता है– "मोतीलाल का दोष नहीं, भाई! आखिर उसे रहना तो इसी गाँव में है और यह गाँव जिस आदमी को अछूत मान लेगा उसे मानना ही पड़ेगा। उसे गाँव ने अब तक अछूत नहीं माना वह इसी का शुक्र मना रहा है। बात धर्म की ही तब तो,बात शक्ति की है, राजनीति की है।"(वही,पृ.–11)

गाँव में हरिवंश पुराण की कथा होती है। तब बीच में से ही मौका पाकर धर्मेन्द्र और दयाल चमारी चेनइया के साथ कुकर्म करके आते है। जब कथा प्रसाद बाँटने का समय आता है तो चेनइया का भाई प्रसाद को छू जाता है, तब इन्हीं लोगों के ऊपर पहाड़ टूट पड़ता है। जो कुछ समय पहले चेनइया के साथ कुकर्म करके आए थे, वे ही अब कैसे जातिगत पैंतरे बदल रहे हैं। चित्रण देखिए– "देखो साले चमरिया ने प्रसाद छूकर अपवित्र कर दिया। अब इस प्रसाद का क्या होगा? धर्मेन्द्र क्रोध से थूक फैंक रहे थे जिसके कण लोगों के चेहरों को अपवित्रकर रहे थे।••• अरे जो हुआ सो हुआ, अब छोड़ों यह सब। इस प्रसाद को अछूतों में बाँट दो और ब्राह्मणों के लिए दूसरा प्रसाद ले लो।"(वही,पृ.–24)

ऐसे ही गाँव में पंचायत का चुनाव आता है। तो नीची जाति के लोगों के वोटों को अपनी जागीर समझा जाता है। यह भी राजनीति जातिवाद पर चलती है। जैराम, देवप्रकाश से बातचीत में बनारसी कहता है– "पंच तो मैं हो ही जाऊँगा। बभनौटी की तो मैं नहीं कह सकता, लेकिन पूरी चमरौटी मुझे वोट देगी। नहीं देगी तो, पूरी चमरौटी इकट्ठी फूँक दूँगा।"(वही,पृ.–61)

कीचड़ के रूप में कुछ पुराने अंधविश्वास बचे हुए हैं। एक अंधविश्वास है भूत–प्रेतों के प्रति। इस अंधविश्वास का राजनीतिक प्रयोग भी उपन्यास में बखूबी हुआ है। सारे दुर्गुणों के भण्डार बनारसी पर देवता आता है, जो मोतीलाल से बदला लेने हेतु उसे बदनाम कर देता है–"बनारसी अभुवा रहा था, 'तो ले, सुन लें, पेटमडुता है, पडोसी का, पडोसी का। विधवा भयहु से भसुर ने कुकरम किया है रे, उसी का नतीजा है रे। उसने बच्चे को उसी गड़ही में गाड़ा है, जिसके पास जलेसरा का खेत है–रे। लोगों की दृष्टि मोतीलाल की ओर चली गई। मोतीलाल का चेहरा क्रोध से लाल हो गया। यह सारी हुलिया उसी की है।"(वही,पृ.–29) गाँव की इस राजनीति की जड़ है शोषण चक्र और ग्रामीण जनता की आर्थिक विवशता। शिवलाल जैसे इसी विवशता का लाभ उठाते हैं और देवप्रकाश जैसे अपने शत्रुओं के विरूद्ध गाँव को खड़ा कर देते हैं। गाँव के नेता मोतीलाल पूँजीपतियों (शिवलाल और शामदेव) के दलाल हैं, जिससे हालत बद से बदतर होती जा रही है। देवप्रकाश जयराम को बताता है कि मोतीलाल शामदेव का दलाल बनकर आया था। इस पर जयराम कहता है– "वे तो आवेंगे ही। नेताओं का तो यही रोल रहा है– क्या गाँव के स्तर पर और क्या देश के स्तर पर।"(वही,पृ.–68)

(2) मूल्य–विघटन की त्रासदी– 'सूखता हुआ तालाब' उपन्यास में विघटित मूल्यों की त्रासदी प्रस्तुत की गई है। यहाँ गाँव की समूची सामाजिक ज़िन्दगी वस्तुतः राजनीति की विषाक्तता के कारण टूट रही है। सामूहिक जन–जीवन की टूटन का प्रतीक है– 'रामी तालाब', यहाँ की ज़िन्दगी ईर्ष्या–द्वेष एवं पारस्परिक वैमनस्य का प्रतीक है। इस संदर्भ में उपन्यास से चित्र दृष्टव्य है– "रामी तालाब का पानी काफी सूख गया था। सूखे हुए जल पर एक हरी.हरी गंदी पर्त बिछी हुई थी, किनारे.किनारे काली कीचड़ फैला हुआ था और सूखी हुई कीचड़ पर लोगों के मल.मूत्र बिखरे हुए थे।••• उसके पास से गुजरते हुए देखा कि कुछ लोग मछली मारने का जाल फैलाए बैंठे हैं और दा.चार आदमी जल को हड़होड़ रहे हैं। जल के भीतर दबी हुई जैसे वर्षों की गन्दगी ऊपर आ रही है। चक्करदार गन्दे जल में मछलियाँ इधर से उधर बेतहाशा भाग रही हैं। चीलें बगले ऊपर–ऊपर से झपट्टा मारने के लिए उड़ रहे हैं।"(वही,पृ.–65)

इस तालाब का सूखना गाँव के पुराने आदर्श जीवन.मूल्यों का चुकना है। कीचड़ के रूप में कुछ पुराने अन्धविश्वास बचे हुए हैं। एक अंधविश्वास है भूत.प्रेत के प्रति। इस प्रेत बाधा से देवप्रकाश, शंकर और जैराम को छोड़कर और कोई नहीं बचा है। सारे दुर्गुणों के बनारसी पर देवता का आवेश आता है। बनारसी के संकेत पर आया एक ओझा.ज्योतिषी सारे गाँव को भूत–प्रेतों के नाम पर ठग ले जाता है। जैराम गाँव की गिरती ज़िन्दगी के सम्बंध में कहता है– "नहीं, कोई नहीं जानता कौन कब क्या काम कर देगा। पहले गाँव में दो–एक चोर–उचक्के होते थे, अब सारा गाँव हो गया है। पहले दो–एक तरह की बदमाशियाँ होती थीं अब तरह–तरह की होती हैं। इसलिए अब कोई किसी का नाम आसानी से नहीं ले सकता।••• यही इस गाँव का दस्तूर है। इतना बड़ा अभागा गाँव न होता तो

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

क्या दलिद्दर होता?"(वही,पृ.–40)

दूसरी पुरानी कीचड़ है जाति–पाँति का शिकंजा और जरा–सी बात पर जाति से निष्कासन। आज इस जाति से बहिष्कार के पीछे जातीय पवित्रता नहीं है। बल्कि अब यह गाँव की राजनीति का एक शक्तिशाली हथकण्डा बन गया है। शामदेव या शिवलाल या उनके अन्य पक्षधर हिजड़े धूर्त और पतित हैं। मुरतिया की माँ गुस्से में कहती है– "बड़े पतिहा बने फिरते हैं–बाप से नहीं पूछते कि कोई हरवाहिन बची हुई नहीं है जिसके मुँह में मुँह न मारा हो।" (वही,पृ.–14)

अंत में देवप्रकाश नारायणपुर के शंकर को चुनाव में सरपंच बनवाकर चुनाव–स्थल से ही गाँव से सदा के लिए मुँह मोड़, स्टेशन की राह पकड़ लेता है, क्योंकि अब उसकी दृष्टि में सत्य और न्याय के लिए उठती हुई आवाज नक्कारखाने में तूती की आवाज बनकर रह गई है। मार्ग में झुटपुटे में नदी के पास ही अपनी विवशताओं, अभावों और पापों की ममतामयी गठड़ी उठाए जाती हुई चेनइया मिली, जो कि सदा के लिए गाँव से विदा हो रही थी। चेनइया भाव–विभोर होकर देवप्रकाश से कहती है– "बाबा, गाँव सचमुच रहने लायक नहीं है, मैं गाँव से भाग रही हूँ। गाँव ने मुझे बेस्सा बनाकर छोड़ दिया, अब जान लेने पर उतारू है।"(वही,पृ.–70)

(3) ग्रामीण परिवेश की झलक– 'सूखता हुआ तालाब' उपन्यास में ग्रामीण एवं लोक परिवेश की यथार्थ झाँकी देखने को मिलती है। यहाँ पर मिश्र जी ने गाँव के पिछड़ेपन, वहाँ के परिवेश और भाषा–शैली का सजीव निरूपण किया है। गाँव का शहरों की अपेक्षा पिछड़ा होना वहाँ की नियति है। सदियों से यहाँ विकास का अभाव रहा है। गाँव में आए हुए ज्योतिषी के शब्दों में– "इधर? अरे, क्या बताऊँ, अजब इलाका है बच्चा। मैं तो इस खोह–खाई में फँस ही गया हूँ, चलते–चलते दम निकल गया। ऊधो बाँह गहे की लाज।" (वही,पृ.–42)

और भी हाल यह है कि–"हर जाड़े में अकाल पड़ जाता हे। का बाभन, का चमार–सारा गाँव भूख के मुँह में छटपटाने लगता है। बस साग–पात का आसरा होता है और कोई काम.काज तो कहीं होता नहीं कि कुछ मँजूरी–पताई मिले और खेत में ही कुछ तैयार होता है और खेत में कुछ हो तो कौन उसके खेत हैं। पूरी चमरौटी में खाली गोड़इत को दो बिगहा खेत हैं। बाभनों में भी कौन बड़ा मालदार है? अरे, शिवलाल और शामदेव बाबा के यहाँ अन्न की तरी है जो कभी टूटती नहीं, बाकी लोग बस हमारी ही तरह है।"(वही,पृ.–51)

आज भी स्थिति यह है कि गाँव में अभी भी अंधविश्वास, धार्मिक विद्वेष आदि का प्रचलन बना हुआ है। यहाँ भूत–प्रेत की कल्पना की जाती है। एक दूसरे पर आरोप–प्रत्यारोप करके सताया जा रहा है। शिकारपुर गाँव में यह वातावरण सर्वत्र व्याप्त है। वनमुर्गियों के रूप में भूत–प्रेत की धोषणा की जाती है। बनारसी मोतीलाल के घर का पेटमडुवा बताता है। पेटमडुवा का मतलब है कि अवैध गर्भ को पेट मांडकर गिरा देते हैं तब वह गर्भस्थ जीव भूत बन जाता है। बनारसी अभुवा रहा था– "तो ले, सुन ले, पेटमडुवा है पड़ोसी का, पड़ोसी का। विधवा भयहु से भसुर ने कुकरम किया है रे, उसी का नतीजा है रे। उसने बच्चे को उसी गड़ही में गाड़ा है, जिसके पास जलेसरा का खेत है रे। बनारसी जोर–जोर से उठने–गिरने लगा और जलेस्सर टि–टि–टि–टि–टि करके रोने लगा।"(वही,पृ.–29)

धार्मिक–अनुष्ठानों की स्थिति भी इस उपन्यास में बड़ी निराली है, क्योंकि उनके मूल में अस्तिकता एवं गहरी संवेदनशीलता का कोई तकाजा नहीं हैं। शिवलाल हरिवंश पुराण की कथा का आयोजन शुद्ध आध्यात्मिक दृष्टि से नहीं करता, अपितु खाली समय को काटने एवं अपने पुत्र की संतान कामना से करता है। मजे की बात तो यह है कि पुराण–कथा में फिल्मी गीतों की तरजें चलती हैं, यथा–

"कि मेरा तन डोले हो मन डोले हो
मेरे मन का गया करार हो
कौन बजावे बाँसुरिया
कि आरे किसुना
कौन बजावे बाँसुरिया।"(वही,पृ.–20)

कीर्तन मण्डली के कर्त्ता–धर्ता है धर्मेन्द्र मास्टर एवं दयाल जैसे पापी जो कीर्तन प्रारम्भ करने से पहले अपने खेत में गरीब चमार की बेटी चेनइया की अस्मत लूटते हैं। कीर्तन में हुई थोड़ी देरी को बहानों से छिपाते हैं। बात यहीं तक रहती तो भी ठीक, लेकिन पराकाष्ठा उस समय आती है, जब प्रसाद बाँटते समय चेनइया के भाई का हाथ प्रसाद को छू जाता है तो बदले में धर्मेन्द्र कड़ाक से गाल पर चाँटा मारता है। कहता है– "देखो साले चमरिया ने प्रसाद छूकर अपवित्र कर दिया। अब इस प्रसाद का क्या होगा? धर्मेन्द्र थूक फेंक रहे थे जिसके कण लेागों के चेहरों को अपवित्र कर रहे थे।" (वही,पृ.–24)

इसके साथ ही, 'सूखता हुआ तालाब' में मौसम, ऋतुएँ फसल, पर्व.त्योहार, शादी–विवाह आदि से सम्बंधित परिवेश की जीवंत झाँकी प्रस्तुत की गई हैं। मक्के की फसल का चित्रण करते हुए लेखक ने लिखा है–"गाँव के पास ही मक्के की फसल शुरू होती थी। हाँ इस साल सारे गाँव ने इसी ओर मक्का बोया है। बहुत जोरदार मक्का है इस वर्ष पुरखों लम्बी मक्के की फसल.इसमें तो हाथी छिप

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

जाए तो भी पता न लगे।"(वही,पृ.–12) ऐसे ही रबी की फसल का चित्रण देखिए– "इस साल फसल खूब आई हुई थी। रंग–बिरंगी फूलों से लदी मटर दिसम्बर की सुनहली धूप में जैसे नहाकर अपना शरीर सुखा रही थी। सरसों के पीले–पीले फूल खेतों के ऊपर आकाश को रंग रहे थे। खेतों की गलियों से लोग आ रहे थे, जा रहे थे।"(वही,पृ.–55) ग्राम परिवेश को जीवंत रूप में प्रस्तुत करने के लिए मिश्र जीने इस उपन्यास में लोक गीतों का भी भरपूर सहारा लिया है। यहाँ लोक गीतों का उपयोग खुलकर हुआ है। ग्राम जीवन की झाँकी इन लोक गीतों की अपनी विशेशता है। कजली, कबीर, विरहा आदि गीतों की प्रस्तुति यहाँ देखने को मिलती है। उदाहरण दृष्टव्य हैं–

"रिमझिम–रिमझिम बरसने पनिया,
मेर अगिनिया ना सेराय।
आरे रामा जुलुम करे असरेसवा,
सइयां छवले कौने देसवाँ।।"(वही,पृ.–18)

इस उपन्यास में ग्रामीण परिवेश से संबंधित भाषा. शैली सार्थक एवं प्रवाहपूर्ण तो है ही, उसमें प्रयुक्त मुहावरों एवं लोकोक्तियाँ जनभाषा की प्रयोगशीलता को प्रतिपादित कर कथा को आंतरिक दीप्ति प्रदान करते हैं। ये लोकोक्तियाँ ग्रामीण पृष्ठभूमि, अंचल के ठेठपन और लोकजीवन के सत्यों की जिन्दा अभिव्यक्तियाँ हैं। उदाहरणार्थ–"कहीं किसी के पैर ऊँचे–नीचे पड़ गए तो, सब लोग मिलकर उवार लेते थे, अब तो नपुंसकों की जमात है।"(वही,पृ.–04) "जिस दिन वह भरी सभा में पेश करेगा उस दिन धर्मेन्द्र साले की सारी पतिहई भूल जायेगा और आँखें उलट जायेंगी।" (वही,पृ.–12)

कुल मिलाकर, रामदरश मिश्र कृत 'सूखता हुआ तालाब' उपन्यास एक तरह से 'जल टूटता हुआ' का संक्षिप्त संस्करण है। भ्रष्ट राजनीति, स्वार्थी घेराबन्दी, पदलोभी प्रवृत्ति, अनैतिक स्थितियाँ सामाजिक एवं नैतिक मूल्य विघटन आदि विविध संदर्भ बिन्दु हैं, जिनके बीच से गुजर कर लेखक ने गाँव को उसके नए रूप में, नई चुनौतियों के बीच पहचानने की कोशिश की है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मिश्र, रामदरश एवं मिश्र स्मिता, (2000) 'रामदरश मिश्र रचनावली', भाग–6, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. काले, अनिल (2007) 'रामदरश मिश्र के उपन्यासों में ग्रामीण परिवेश', चिन्तन प्रकाशन, कानपुर।
3. षर्मा डॉ. ममता (2002) 'रामदरश मिश्र के उपन्यासों में ग्राम चेतना' (जल टूटता हुआ' के संदर्भ में), राष्ट्रीय ग्रन्थ प्रकाशन, गांधी नगर।
4. वैष्य डॉ. प्रभुलाल डी., शाह डॉ. गुजनश (2001) 'रामदरश मिश्र की उपन्यास यात्रा', प्रकाशन, अहमदाबाद।
5. यादव डॉ. फूलबदन (1992) 'रामदरश मिश्र व्यक्तित्व एवं कृतित्व', राधा प्रकाशन, दिल्ली।
6. जनकसिंह एवं मिश्र स्मिता (1999) 'रामदरश मिश्र व्यक्ति और अभिव्यक्ति', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. अमिताभ डॉ. वेदप्रकाश एवं डॉ. प्रेमकुमार (2010) 'उपन्यासकार रामदरश मिश्र', नमन प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. मिश्र शिवकुमार (1978) 'यथार्थवाद', दि मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली।
9. तिवारी नित्यानंद एवं गुप्त डॉ. ज्ञानचन्द (1990) 'रचनाकार रामदरश मिश्र' राधा, पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
10. गुप्त डॉ. कमला (1979) 'हिन्दी उपन्यासों में सामंतवाद', अभिनव प्रकाशन नई दिल्ली।

*****